



प्रकृति, पर्यावरण और संगीत का परस्पर संबंध

डॉ. दीप्ति बंसल

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत-विभाग, दौलत राम कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

लेख विवरण

सारांश

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 14/03/2026

स्वीकृति तिथि: 20/03/2026

प्रकाशनतिथि: 31/03/2026

मुख्य शब्द: पर्यावरण, प्रकृति, संगीत, संतुलन, सकारात्मक

मानव जीवन का आधार प्रकृति और पर्यावरण है। सृष्टि को बनाए रखने के लिए इन दोनों का संतुलन आवश्यक है। संगीत इस पर्यावरणीय संतुलन को बनाने में सहायक सिद्ध होता है। प्रकृति जो स्वयं विद्यमान है, वह शक्ति है जिसके द्वारा समस्त सृष्टि संचालित है। पर्यावरण का तात्पर्य उन जैविक और अजैविक तत्त्वों से है जो हमारे ईर्द-गिर्द के वातावरण में हैं। मनुष्य ने संगीत का अनुपम उपहार प्रकृति से प्राप्त किया और उसे अपनी साधनाओं से परिष्कृत किया। वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण का संतुलन मनुष्य की भोगवादी वृत्ति के कारण बिगड़ा हुआ है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के राग इस संतुलन के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। पर्यावरण के प्रदूषण को हम संगीत के माध्यम से दूर कर सकते हैं। जड़ और चेतन दोनों पर संगीत की तरंगों का प्रभाव पड़ता है। यदि हम संगीत द्वारा सकारात्मक तरंगों का संचार करते रहें तो हमारे पर्यावरण का हनन नहीं होगा।



1. प्रस्तावना

समस्त ब्रह्मांड में पृथ्वी ही एक ऐसी जगह है जहाँ मानव जीवन है। प्रकृति और पर्यावरण मानव जीवन का प्राणभूत आधार हैं। सृष्टि को बनाए रखने के लिए प्रकृति व पर्यावरण के साथ सामंजस्य व संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। संगीत, जो प्रकृति के कण-कण में बसा है, इस संतुलन को बनाने में सहायक सिद्ध होता है। प्रकृति, पर्यावरण और संगीत का संबंध अटूट है। इनका परस्पर तालमेल हमारे जीवन को जीवंत बनाता है। मनुष्य प्रकृति के विविध रूपों से प्रभावित रहा है। उसका पालन-पोषण प्रकृति के द्वारा प्रदान किए गए पदार्थों से होता है। जिन पाँच तत्त्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर मनुष्य का शरीर निर्मित हुआ है, उन्हीं से पर्यावरण भी बनता है। संगीत, जो मानव मन की सहज, सरस अभिव्यक्ति है, प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण में सहायक है।

प्रकृति –

‘प्रकृति’ संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है ‘स्वभाव’ अथवा ‘मूल स्वरूप’। इस मूल स्वरूप के अंतर्गत पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, पेड़-पौधे, वृक्ष, समस्त जीव-जंतु आदि आते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, तो जो स्वयं से विद्यमान है वह प्रकृति है। व्यापक अर्थ से देखें तो प्राकृतिक और भौतिक जगत को हम प्रकृति कहेंगे। मनुष्य भी प्रकृति का ही हिस्सा है। प्रकृति वह शक्ति है जो समस्त सृष्टि को संचालित करती है।

पर्यावरण –

‘पर्यावरण’ शब्द दो शब्दों के मेल से बना है ‘परि’ अर्थात् ‘चारों ओर’ और ‘आवरण’ अर्थात् ‘घेरा’। पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारों ओर का वातावरण जिसमें जैविक और अजैविक तत्त्व है। जैविक के अंतर्गत मनुष्य, पशु-पक्षी जीव-जंतु, पेड़-पौधे इत्यादि आते हैं और अजैविक के अंतर्गत जल, भूमि, सूर्य का प्रकाश, हवा, मिट्टी, खनिज इत्यादि आते हैं। शुद्ध पर्यावरण मनुष्य जीवन की आवश्यकता है।



संगीत –

भारतीय दर्शन और संगीत परम्परा में 'ओम्' (ॐ) को संगीत का मूल स्रोत माना गया है। यह एक ब्रह्मांडीय कंपन है जिसे हमारे ऋषि-मुनियों ने ध्यान में अनुभव किया। इसे अनाहत नाद कहा गया। आदि काल में संगीत का स्रोत प्राकृतिक ध्वनियाँ थीं जैसे पक्षियों का कलरव, बहते हुए झरनों की आवाज़, जीव-जंतुओं की आवाज़ इत्यादि। इन ध्वनियों में छिपे संगीत को पहचान कर मनुष्य ने उसे लय में बांधने का प्रयास किया। हिन्दु पौराणिक कथाओं के अनुसार सात-स्वरों की उत्पत्ति भी पशु-पक्षियों से मानी गई है। मोर से 'सा', चातक से 'रे', बकरे से 'ग', कौए से 'म', कोयल से 'प', मेंढक से 'ध' और हाथी से 'नि' स्वर की उत्पत्ति हुई है। (जोषी, जनवरी 1969) मनुष्य ने संगीत का अनुपम उपहार संगीत से ही प्राप्त किया है।

प्रकृति और पर्यावरण का असंतुलन –

सृष्टि को बनाए रखने के लिए प्रकृति तथा पर्यावरण का संतुलन आवश्यक है। यदि हम प्रकृति के विरुद्ध जाकर कुछ कार्य करते हैं तो समस्त वायुमंडल, जलमंडल और स्थल मंडल अस्त व्यस्त हो जाता है। उदाहरणार्थ – किसी जंगल में पशु-पक्षी आनन्द से विचर रहे हों, मन्द-मन्द बयार बह रही हो, चहूँ ओर चिड़ियाँ चहचहा रही हों और तभी एक शिकारी की बंदूक से गोली चले तो उस शोर से जंगल का वातावरण क्षण भर के लिए बिखर सा जाता है। पक्षी उड़ जाते हैं, पशुओं में हड़कम्प-सा मच जाता है और हवा की गुनगुनाहट खो जाती है। इसी प्रकार शहरीकरण, वायु तथा जल प्रदूषण, वनों की कटाई, ध्वनि-प्रदूषण इत्यादि ने हमारे पर्यावरण को प्रभावित किया है जो एक चिन्तनीय विषय है।

प्रकृति के नियम अटल हैं और वह स्वयं अनुशासित रूप से अपना कार्य करती रहती है। प्रकृति का ऋतु चक्र पृथ्वी का सन्तुलन बना कर रखता है। किन्तु मनुष्य अपनी सुख-सुविधा, संग्रह और भोगवादी वृत्ति के कारण प्रकृति के नियमों से लगातार खिलवाड़ करता रहता है।



प्रकृति के अंधाधुन्ध दोहन के फलस्वरूप जल स्रोत सूख रहे हैं, मौसम अत्यधिक गर्म हो रहे हैं और वनों का संरक्षण नहीं हो रहा है। जब-जब प्रकृति और पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है तब-तब कोई न कोई अनिष्ट होता है। जैसे – जंगलों की आग, सुनामी, केदारनाथ त्रासदी, चक्रवात, फ़ानी आदि।

संगीत द्वारा संरक्षण –

संगीत वातावरण को व्यवस्थित बनाने में सक्षम है। राग शास्त्रीय संगीत का आधार है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बहुत से ऐसे राग हैं जो प्रकृति की विभिन्न ऋतुओं से तादात्म्य रखते हैं जैसे वर्षा ऋतु में मेघ मल्हार, मियाँ मल्हार, सूर मल्हार आदि; बसंत ऋतु में बसंत, बहार, हिन्दोल, हेमन्त ऋतु में मालकौंस, ग्रीष्म ऋतु में दीपक, पंचम और शिशिर ऋतु में श्री राग आदि। प्रत्येक राग का एक अलग रस और भाव होता है। राग में प्रयुक्त स्वर-समूह मानव और प्रकृति पर अपना असर डालते हैं। संगीत मनुष्य के हृदय में उठने वाले भिन्न-भिन्न भावों जैसे प्रसन्नता, घृणा, उल्लास करुणा, प्रेम, दुःख आदि को उजागर करता है। सुप्रसिद्ध शास्त्रीय कलाकार पंडित राजन एवं पं. साजन मिश्र द्वारा गाई राग मेघ मल्हार की बंदिष में वर्षा की सरसता भरपूर झलकती है – “बादर गरज नभ घोर रे” (दरबार फेस्टीवल 2016)। विदुषी लक्ष्मीशंकर द्वारा गाए गए राग बसंत के द्रुत ख्याल में बसंत ऋतु की मादकता का अनुभव होता है – “आई आई रूत बसंत फूली सब डारी, सखियन के संग संग नाचत गिरधारी, मन उमंग तन तरंग खेलें सब होरी” (त्वस्ण 3) रागों का प्रकृति से तादात्म्य है और उनका प्रभाव शास्त्रीय संगीत के महान कलाकार संतूरवादक पंडित शिव कुमार शर्मा के ‘ड्यूझाप्स’ (षर्मा, 2012) नामक कैसेट में दृष्टिगोचर होता है। संगीत प्रकृति के कितना निकट है इसका आभास हमें इस वाद्य-संगीत से होता है। रागों का उपयोग प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए किया जा सकता है।



देश की प्राकृतिक अवस्थाओं जैसे नदियां, झरने, पर्वत, मैदान, रेगिस्तान, जलवायु आदि का मनुष्य के स्वभाव और कार्यशैली पर प्रभाव पड़ता है। अतः प्राकृतिक वातावरण उस इलाके के संगीत को भी प्रभावित करता है। यही कारण है कि भारत में विभिन्न प्रांतों का संगीत भिन्न-भिन्न है। पंजाब प्रांत का संगीत जोशीला और ओजपूर्ण है चूंकि पंजाब प्रांत को बारम्बार आक्रमणकारियों का सामना करना पड़ा। (जोषी, जनवरी 1969) अपने संकटपूर्ण जीवन से उबरने के लिए उन्हें ऐसे संगीत की आवश्यकता हुई जो उनमें चेतना और स्फूर्ति जागृत करे। इसी प्रकार जो शहर गंगा नदी के किनारे बसे हैं, उनके संगीत में आध्यात्मिक पुट मिलता है। रेगिस्तान का सूखापन दूर करने हेतु राजस्थानियों ने संगीत को मनोरंजन का साधन समझा। अतः उनका संगीत रंगरेलियों से परिपूर्ण है। उत्तर भारत की अपेक्षाकृत दक्षिण भारत आक्रमणकारियों से सुरक्षित रहा है अतः यहाँ भारतीय संगीत की मौलिकता और शुद्धता बनी रही। अतः हम देखते हैं कि पर्यावरण के अनुसार प्रांतीय संगीत का निर्धारण होता है। संगीत द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है जो उनके संरक्षण में सहायक है।

पर्यावरण के प्रदूषण पर संगीत का प्रभाव –

पर्यावरण का प्रदूषण मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे शारीरिक, मानसिक सामाजिक, आध्यात्मिक आदि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इन सभी क्षेत्रों में संगीत सकारात्मक रूप से कार्य करता है। एक स्वस्थ वातावरण के निर्माण के लिए स्वस्थ शरीर और मन का होना आवश्यक है। शारीरिक थकावट, मानसिक तनाव, निद्रा रोग, माइग्रेन, हृदय-रोग, उच्च रक्तचाप और नाना प्रकार के रोगों में संगीत-चिकित्सा सहायक सिद्ध हुई है। रोग होने पर रोगी की नाड़ी का संतुलन बिगड़ जाता है। इस असंतुलन को स्वर व ताल द्वारा ठीक करके स्वास्थ्य लाभ लिया जा सकता है। संगीत की इसी गुणवत्ता के कारण प्राचीन काल में योगियों और ज्ञानियों ने ध्वनियों को साधना, ध्यान, योग और उपचार पद्धति में स्थान दिया। उल्लेख मिलता है कि प्रसिद्ध पखावज़ वादक कुदउं सिंह ने पखावज़ बजाकर उसकी ताल ध्वनि से एक पागल हाथी को अपने वश में कर लिया था।



असंतुलित मस्तिष्क पर लय-ध्वनि के प्रभाव की यह एक उल्लेखनीय और ऐतिहासिक घटना थी। (सेन, 2005)

जड़ और चेतन, दोनों पर संगीत की तरंगों का प्रभाव समान रूप से पड़ता है। वैज्ञानिकों ने वनस्पति जगत पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया। इन प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया गया कि यदि हम गायों को दोहते समय उपयुक्त संगीत सुनाएँ तो वे अधिक दूध देती हैं। पेड़-पौधों के विकास पर भी संगीत का प्रभाव देखा गया। संगीत का प्रभाव पशुओं पर भी उतना ही पड़ता है जितना कि मानव जाति पर। मुगल सम्राट अकबर के दरबारी गायक मियां तानसेन के संगीत की विचित्र गाथाएँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि तानसेन का तोड़ी राग सुनकर मृगों का झुण्ड दौड़ा चला आता था।

सामाजिक वातावरण को शांतिपूर्ण बनाने में संगीत का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। अस्पताल, रेलवे-स्टेशन, ध्यान-केंद्रों, बैंक, प्रतीक्षालयों आदि जगहों पर पृष्ठभूमि में अनुकूल संगीत बजा कर वातावरण को स्वस्थ और ऊर्जा युक्त बनाया जा सकता है। एक रोगी के कथनानुसार दिल्ली के डॉ. श्रॉफ के आई क्लीनिक में मन को विश्राम देने वाला संगीत सदैव बजता रहता है। यह संगीत रोगियों के मन की बेचैनी को शांत करने में मददगार सिद्ध होता है। एक चश्मे की दुकान में रोज़ उसका मालिक ऐसे वाद्य संगीत को यू-ट्यूब पर चलाता था जिसकी तरंगें नकारात्मकता को नष्ट कर दुकान के वातावरण में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती थीं।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो ओंकार की ध्वनि का वातावरण की शुद्धता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। परीक्षणों ने सिद्ध किया कि इसके उच्चारण से शरीर और मस्तिष्क में अल्फा तरंगें उत्पन्न होती हैं जो मानसिक तनाव को समाप्त करने में सक्षम हैं। (खरे, नवम्बर 2013) ओंकार की ध्वनि के नियमित अभ्यास से मनुष्य में सकारात्मक तरंगों का संचार होता है। मनुष्य के अंतर्जगत में यदि संयम, शांति और प्रसन्नता होगी तो उसका बाह्य पर्यावरण पर निश्चय ही अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।



मंदिरों, गिरिजाघरों आदि धार्मिक स्थलों पर घण्टियाँ लटकाने का प्रचलन है। इसका कारण है कि घण्टी की ध्वनि वातावरण को शुद्ध और पवित्र कर देती है। घण्टे की ध्वनि सकारात्मक तरंगें उत्पन्न करती हैं। उल्लेख मिलता है कि बस्तर की मुरिया जनजाति के लोग 'ककसाड़' नृत्य करते समय बीस-पच्चीस किलो की घण्टियाँ कमर में बांधते हैं और रात भर नृत्य करते हैं। (निरगुणे, जून 2015)

निष्कर्ष –

संगीत प्रकृति की उपज है और पर्यावरण का मित्र है। उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रकृति, पर्यावरण और संगीत का घनिष्ठ संबंध है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड में जो भी 'शब्द' या 'ध्वनि' एक बार उत्पन्न हो जाती है तो वह कभी नहीं मिटती। उसकी तरंगें अंतरिक्ष में विद्यमान रहती हैं। यदि हम सकारात्मक संगीत ध्वनि-तरंगों का संचार करते रहें तो इस पृथ्वी का वातावरण स्वच्छ और सुगंधित रहेगा। संगीत के द्वारा हम भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण को स्वच्छ रख सकते हैं।

मनुष्य यदि प्रकृति से तादात्म्य बिठा कर चले तो उसे प्राकृतिक आपदाओं और विपदाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए अनुकूल संगीत का प्रयोग करने से हमारे पर्यावरण का हनन नहीं होगा। अतः प्रकृति, पर्यावरण और संगीत का परस्पर संबंध पर्यावरणीय संतुलन के लिए सर्वदा उपयोगी है।

संदर्भ सूची

- खरे गणेश, ओम साधना और उसका महत्व, संगीत (नवम्बर 2013), संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ. 15
- जोशी उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास (जनवरी 1969), मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फ़िरोज़ाबाद, पृ. 5



- जोशी उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास (जनवरी 1969), मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फ़िरोज़ाबाद, पृ. 35
- निरगुणे, वसन्त, जीवन चक्र के आस-पास एक पवित्र ध्वनि, संगीत (जून 2015), संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ. 41
- Mishra Rajan And Mishra Sajan, Raga Megh, youtube@darbarfestival (2016)
- Shankar, Lakshmi, Songs of the Season, Vol .3, youtube@musictodayTV.
- Sharma, Shiv Kumar, Dewdrops, youtube@musictodayTV (2016)
- सेन, अरुण कुमार, भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन (2005), मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ एकेडमी, भोपाल, पृ. 186